कंजूस मन से मनुष्य गरीब होता है

इस सृष्टि में भगवान ने अनन्त प्रकार के भोग और वस्तुयें बनाई है, सुख समृद्धि दी हैं, परन्तु वह परमात्मा इतना परोकपकारी और उद्धार है कि उसमें से लेशमात्र भी अपने लिए नहीं लेता। सब कुछ संसार को बाँट देता है। ईश्वर ही क्या प्रकृति और पशु भी जो उसके पास है, वह मानव मात्र की सेवा में अर्पित कर देते हैं। सूरज प्रकाश देता है चांद शीतलता देता है, मेघ पानी देते है। धरती अपनी गोद में हम सभी को समेटे हुए है। हमें अन्न और अनेक प्रकार के द्रव्य प्रदान करती है। और वह भी निरन्तर। नदियां कभी यह नहीं देखती कि उनका पानी कौन पी रहा है? पशु-पक्षियों का मनुष्य जेसा चाहे वैसा प्रयोग करता है। परन्तु वे कुछ नहीं कहते। उनका अपना कुछ नहीं है। परन्तु बड़ी अजीब सी बात है कि स्वयं को सबसे ज्ञानी और विवेकवान मानने वाला मानव अपेक्षाकृत अधिक स्वार्थी, संचयी और कृपण (कंजूस) है। वह पाना तो बहुत चाहता है परन्तु देना कुछ चाहता। कंजूसता की प्रवृत्ति सिर्फ स्वर्थपरता ही नहीं वरन ईश्वरन के प्रति कृतघ्नता भी है। क्योंकि ईश्वर ने हमें जो कुछ दिया है, वह सिर्फ संचय करने के लिए नहीं, अपितु दूसरों में बाँटने के लिए दिया है।

छोटा दिल न करें: ऐसे कई लोग खिलेंगे, जिनके पास ईश्वर का दिया हुआ घर, मकान, मोटर, गाड़ी, धन, दौलत सुख साधन सभी कुछ है और वह भी इतना प्रर्याप्त है कि वे उेस मानव कल्याण के लिए, दूसरों की सेवा के लिए अर्पित कर सकते है। परन्तु वे अपने दिल को इतना छोटा कर लेते हैं कि सब कुछ होते हुए भी सदा कंगाल और फटेहाल ही बने रहते हैं। उनकी बन्द मुट्ठी दूसरों को कुछ देने के लिए खुलती ही नहीं। ऐसी कृपणता, निर्धनता के समान है। यह मन की गरीबी है, कृपण व्यक्ति सब कुछ होते हुए भी खुले दिन से दूसरों के लिए कुछ नहीं लगा पाते। इतिहास इसका साक्षी है अतीत में जितने राजा महाराजा हुए उनमें धन दान करने की प्रवृत्ति बहुत ही तीब्र होती थी। जिसके कारण उनकी काया कल्प होती थी और उससे दूसरों का तथा स्वयं का कल्याण होता था। आपके पास जो कुछ है उसे यदि ईश्वर की दौलत समझ बड़ा दिल करके यदि परमार्थ के कार्य में लगायेंगे तो आपका धन उतना ही बढ़ता जायेगा। क्योंकि यह धन ईश्वर का दिया होता है। ईश्वर की दुआ के साथ-साथ मनुष्यात्माओं की भी दुआ मिलती है। जिससे मनुष्य सदैव थोड़े से धन में भी सुखी एवं संतुष्ट रहता है।

यहाँ केवल प्रश्न स्थूल धन से ही नहीं है बल्कि स्थूल धन का स्रोत ज्ञान धन की बात है। ज्ञान धन संसार में सबसे बड़ा धन है। स्थूल धन से केवल आप चन्द दिनों तक ही किसी का दु:ख दूर कर सकते है परन्तु ज्ञान धन का दान करने से वह व्यक्ति सदैव के लिए धनवान हो जायेगा और मरते दम तक आपको दुआओं से भरपूर करता रहेगा।

कहीं सब व्यर्थ न जाये:- कहावत है - सूम का धन शैतान खाए। अर्थात जो व्यक्ति कंजूसता के कारण जीवन रहते, धन को अच्छे कार्य में नहीं लगाते। निश्चय ही उनका वह धन अनुचित मार्गों से चला जाता है। इसलिए मनुष्य को जीवन रहते हुए अपने धन और साधनों को मानव कल्याण की सेवा में सफल कर लेना चाहिए। क्या पता कौन सी घड़ी अखिरी हो और सब कुछ धरा रह जाए। इसलिए कृपणता को त्याग कर फ्राकदिल और उदार बने। सेवा और दान के द्वार जन्म-जन्मान्तर के भाग्य को जमा करें।

कई बार देखा गया है कि मनुष्य एक-एक कौड़ी इकट्ठ करके महल, अटारी तथा बैंक बैलेन्स करता है परन्तु उसका सदुपयोग न होने के कारण एक दिन हाय करके इस नश्वर का त्याग कर देता है और उसकी आत्मा असंतृप्त ही रह जाती है। इसलिए मनुष्य को इस विनाशी धन व ज्ञान धन का दूसरों के कल्याण अर्थ उपयोग कर अपना समय और श्वांस सफल कर लेना चाहिए।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com